

લા ઇલા હ ઇલ્લાહ



કા મતલબ ઓર ઉસકે તકાએ

મુરતિબ વ હિન્દી તર્જુમા : મુહમ્મદ ઉમેર ટોંકી

નજરે સાની : શૈખ રઝાઉલ્લાહ અબ્દુલ કરીમ મદની

ઇસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ

Mo. : 84017 86172 www.iickutch.blogspot.in

बिस्मिल्लाहीर्रहमानीर्रहीम

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन, वस्सलातु
वस्सलामु अला-रसूलिलहिल अमीन अम्माबाद.

तौहीद की तारीफ़ (परिचय)

अल्लाह तआला को उसकी जात, अस्मा व सिफ़ात (नामों व
गुणों) और हुक्कू यानी एबादत में अकेला, यकता और बेमिसाल मानने
को तौहीद कहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने मुशिरकीने मक्का को जब
अेक “ला शरीक” (जुसका कोय हिरसेदार न हो) को मानने की दावत दी
तो उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से पूछा कि जुस हस्ती को
मानने की आप दावत दे रहे हैं, उसका नसब क्या है, यानी वह किस चीज़
से बना है, वह क्या जाता है, क्या पीता है, उसने कीससे पिरासत पाय
और उसका वारीस कौन होगा? तो एन सवालों के जवाब में अल्लाह
तआला ने सूरह एफ़्लास नाज़ील इरमाय़: “आप कह दीज्जे कि वह
अल्लाह अेक (ही) है, अल्लाह (सबसे) बेनियाज़ है (यानी वह कीसी का
मोहताज़ नहीं लेकिन सब उसके मोहताज़ हैं), न उससे कोय पैदा हुआ न
वह किसी से पैदा हुआ, और न कोय उसका हमसर (समान) है.”
(तिर्माज़ी-3314, हसन)

शिर्क की तारीफ़

अल्लाह तआला की जात , सिफ़ात, एफ़्तियारात या एबादत में
किसी दूसरे को शरीक करने या उसकी सिफ़ात में से कोय सिफ़त किसी मख़्लूक
में मान लेने को शिर्क कहते हैं।

तौहीद की अहमियत

1. दावत का आगाज़ तौहीद के प्रचार से किया जाये, तौहीद की
अहमियत को एस तरह वाज़ेह (स्पष्ट) किया जाये कि लोग तौहीद

और शिर्क के दर्मियान इर्क को पहचान लें, जो मुबल्लिगीन (प्रचारक) दापते तोहीद को मुशकिल महसूस करते हुअे लोगों के अकाधद की धस्लाह की तरफ़ ध्यान नहीं देते, ईर दापते तोहीद को दुसरी हैसियत देते हुअे लोगों को नमाज़, रोज़ा, और अज्लाकियात की दापत देते हैं, उनका ये तरीका अम्बिया किराम अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत (तरीके) के भीलाइ हैं.

यही पज़ह है कि ऐसी दापत असल धस्लामी नताधज हासिल करने में नाकाम रहती हैं. धसलियें रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि पसल्लम ने जब मुआज़ भिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन की तरफ़ भेजा तो आप सल्लल्लाहु अलयहि पसल्लम ने उनसे इरमाया: सबसे पहली चीज़ जिसकी तरफ़ तुम लोगों को बुलाओगे वह धस बात की गवाही हो कि अल्लाह के अलावा कोध सय्या म-अबुद नहीं....” (सहीह बुजारी: १३८५)

२. तोहीद ही की जातीर अल्लाह तआला ने सारे धन्सानों और ज़ुन्नों को पैदा किया. (सूरह जारियात: ५५)
३. तमाम रसुलों (संटेष्टाओं) ने अपनी दापत की शुज़्आत तोहिद ही से की हैं. (सूरह अम्बिया: २५)
४. कियामत के दिन, कलिमा-अ-तोहीद ज़ुस पलडे में रजा जायेगा वही पलडा लारी होगा. (तिर्मिज़ी: २५५३, हसन)
५. तोहीद पर धमान (यकीन) न रजने वाले को, उसके नेक आमाल कियामत के दिन कोध इयदा नहीं देंगे. (सहीह मुस्लिम: १३५)
६. तोहीद पर धमान रजने वाले मर्द का (काईर या) मुशिरक औरत से और तोहिद पर धमान रजने वाली औरत का (काईर या) मुशिरक मर्द से निकाह हराम हैं. (सूरह बकर: २२१)
७. तोहीद पर धमान न रजने वाले को मरने के बाद किसी दुसरे शज्स की दुआ या नेक अमल (कर्म) का सवाब नहीं पहुंचेगा. (अहमद: १३३३३, हसन)
८. अल्लाह तआला ने तोहीद पर धमान रजने वालों को मना किया है कि



वह शिर्क की हालत में पड़ता पाने वाले के लिये बफ़िशिश की दुआ करे, याहे वह करीबी रिश्तेदार ही क्युं न हों. (सूरह तोबा: ११३)

८. तोहीद पर धमान न रफने वाले को नबी, पीर या वली से रिश्तेदारी ली जहन्म के अज़ाब से नहीं बचा सकेगी.
(सहीह मुस्लिम: ३३८)

तौहीद की इमीलत

१. तौहीद का धकरार ही जन्नत में जाने का ञरीया होगा.
रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: “ जो शफ्स धस हाल में मरे कि उसे “ला धलाह धल्लल्लाह” का धल्म (यकीन) हो, तो वह जन्नत में जायेगा.” (सहीह मुस्लिम: ३८)
२. तौहीद कुबुल करने वाले दुनिया में हिदायत याइता (सीधी राह पे) और आभिरत में हमेशा के अज़ाब से महकुज़ (सुरक्षित) होंगे.
(अन्आम:८२)
३. कलिमा-अे-तौहीद धीने धस्लाम का सबसे पहला बुनियादी इकन (हिस्सा) है. रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: धस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर रफी गध हैं: (१) धस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोध सरया म-अबुद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अल्लाह के रसुल (यानी संदेश पहुंचाने वाले) हैं. (२) नमाज़ कायम करना (यानी पाबन्दी से पकत पर सुन्नत के मुताबीक अदा करना), (३) ञकात देना, (४) बेतुल्लाह का हज्ज करना और (५) रमजान के रोज़े रफना.
(सहीह बुजारी: ८)
४. कलिमा-अे-तौहीद ही का धकरार गुनाहों की बफ़िशिश का जरीया बनेगा. (सहीह मुस्लिम: १७३)
५. कलिमा-अे-तौहीद का टिल की गहराध और धफ़्लास से धकरार करने वाले के लिये रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम शिफ़ाअत करेगे. (सहीह बुजारी ८८)



नोट :- टिल की गहराई और एप्लास से कहने का मतलब यह है कि कलिमा पढ़नेवाला शिर्क और बिदअत से बचे.

5. सबसे अइज़ल त्रिक “ला एला ह एल्लेलाह” है.

(एब्ने हिब्बान ८४५ सहीह)

पत्राहत:- एन इज़ाएल का मतलब यह हरगीज नहीं कि मुपह्हिद (तौहिद को मानने वाला) जैसा अमल याहे करता रहे वह गुनाहों की सजा पाये बगैर सीधे जन्नत में चला जायेगा, बल्कि एन तमाम अहादीथ का मतलब यह है कि मुपह्हिद अपने गुनाहों की सजा भूगतने के बाद या अल्लाह तआला की तरफ़ से गुनाह माफ़ किये जाने के बाद जन्नत में जरूर जायेगा.

अकीदा-अ-तौहीद का अेक उंसुल मशहूर है, यानी मुशिरक कभी जन्नत में दाखिल नहीं होगा और मुपह्हिद (यानी अल्लाह को उसकी जात और सिद्धात में अेक जानने व मानने वाला, और सिर्फ़ उसी अेक की ही एबादत करने वाला) जहन्नम मे हमेशा के लिये नहीं रहेगा.

तौहीद की किरमें (प्रकार)

यहां तौहीद की तीन किरमें लिखी जा रही हैं, ताकि हम अल्लाह तआला की तौहीद का हकीकी मतलब और उसके तमाम तकाजे से अच्छी तरह परिचित हो जायें.

(१) तौहीदे रुबूबियत (रब होने में अेक मानना)

तौहीदे रुबूबियत का मतलब यह है कि अल्लाह तआला कायनात की हर चीज़ पैदा करने वाला और उसका मालिक है, वही रोज़ी देता है और अकेला ही सारी कायनात का निज़ाम चलाता है, उसको कोय मशपरा देने वाला नहीं और उसके किसी भी काम में कोय हिस्सेदार (Partner) नहीं, वही अकेला कायनात को थामे हुये है और वही ज़ुन्दगी और मौत का मालिक और मुफ्तारे कुल है, वह जो याहे जब याहे और जैसे याहे करने की कुदरत रखता है, वह सबसे पूछ सकता है, उससे कोय नहीं पूछ सकता और ना ही उसे कोय मजबुर कर सकता है, वह हर काम में इकापट डाल सकता

हैं, उसके काम में कोई इकापट नहीं डाल सकता, वह गनी (बेनियाऊ) हैं और सारी कायनात उसकी मोहताऊ है।

ईरशाटे रब्बानी हैं (तरजुमा):- “वह अल्लाह ही है उसके अलावा कोई सच्चा मअबुद नहीं, वह बादशाह है, निहायत मुकद्दस हैं, सब अँगो से पाक हैं, सरासर सलामती और अमन देनेवाला निगेहबान (रक्षक), सब पर गालीब, ताकतवर और बडाई वाला, पाक हैं अल्लाह उन चीजों से जिन्हें ये उसका शरीक (साजेदार) बनाते हैं।” (सुरह हश्र : २३)

और कितना जामे (सम्पूर्ण) बयान है (तरजुमा):- “याद रभो! अल्लाह ही ने तपलीक (पैदा) किया है, तो हुकम भी उसी का है, बडी जूबीयों से बरा हुवा है अल्लाह जो तमाम जहानों का रब (पालनहार) है।”

(सुरह आराफ़: ५४)

मुशिरकीने मक्का भी इस तोहीट को मानते थे। ईरशाटे एलाही है:- “आप एनसे पूछीये कि तुमको ऋमीन और आसमान से रोझी कौन देता है, या (तुम्हारे) कानों और आँखों का मालीक कौन है और बेजान से जानदार और जानदार से बेजान कौन पैदा करता है और कायनात के कामों का एन्तेजाम कौन करता है? जरूर यही जवाब देंगे कि “अल्लाह”। (सुरह युनस: ३१)

अब सवाल ये उठता है कि मुशिरकीने मक्का कायनात को बनाने वाला, रोझी देने वाला, पैदा करने वाला और कायनात की हर चीज का मालीक अल्लाह ही को मानते थे तो झीर वह दूसरो की एबादत कयुं करते थे? तो उनका जवाब अल्लाह तआला ने कुरआन मे ये ठिक़ कीया है की वह कहा करते थे: (तरजुमा) “हम एनकी एबादत सीईई एंसलीये करते हैं कि वो हमें अल्लाह के जयादा करीब कर दें।” (सुरह जुमर: ३)

अल्लाह तआला ने मुशिरकीने मक्का का अक़ जवाब ये भी बयान किया है (तरजुमा) “और केहते हैं ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं।” (सुरह युनस: १८)

एन आयात से वाजेह (स्पष्ट) हैं, कि मुशिरकीने मक्का भी इस तोहीट यानी तोहीटे रबूबियत को मानते थे, लेकीन इसके बा-वजूद क्योकि वह उसकि उलूहियत यानी एबादत में दूसरो को शरीक ठहराते थे, एंसलीये

पह मुशिरक ही कहलाये और अल्लाह तआला ने उन्हें जहन्नम का धंधन करार दिया.

(२) तौहीटे उलूहियत (धबादत)

तौहीटे उलूहियत का मतलब यह है कि तमाम किस्म की ऋजानी व बातीनी, जिस्मानी और माली धबादतें सिर्फ अल्लाह तआला ही के लिये की जायें. जैसे: नमाज, इकु, सजदा, रोजा, ऋकात, हजज, सदका, भैरात, कुरबानी, दुआ, लरोसा, तपाइ (यानी सपाब की नीयत से किसी जगह के चक्कर लगाना), अेतीकाइ (यानी किसी जगह सपाब की नीयत से भेठना), उम्मीटे लगाना, मदद तलब करना और नजर व नियाळ पगेराह यह सब सिर्फ अल्लाह ही के लिये किया जाये. और अगर कोय धन्तिहाय आञ्ठी और धिकंसारी के साथ अल्लाह के अलावा किसी दुसरे के सामने ताळीम के साथ नमाज की तरह भडा होता है तो यह उस जात की धबादत करना ही हुआ, और अगर कोय अल्लाह के अलावा किसी दुसरे के सामने इकु की तरह ऋकता है, या सजदा करता है तो यह भी उस जात की धबादत करना ही हुआ, याहे धसमें कोय दुआ पडे या न पडे, धसलिये धस तरह सिर्फ अल्लाह के सामने ही किया जाये.

धबादत हर पह काम है जो किसी भास हस्ती को भुश करने के लिये या उसकी नाराजगी से बचने के लिये किया जाये और तौहीटे उलूहियत यह है कि यह तमाम काम सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला ही के लिये किये जायें. तशहहुद की दुआ का भी यही मतलब है: (अत्तहिय्यातु लिल्लाही पस्सलपातु पत-तस्थिबातु....) “हर किस्म की ऋजानी, अस्मानी और माली धबादतें अल्लाह ही के लिये हैं.” इरमाने धलाही है: (तरजुमा) “तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम सिर्फ उसी की धबादत करो.” (सुरह बनी धस्राधल: २३)

सय्यदुल अस्तग़ार में तौहीट की दोनों किस्मेंं भोजुद है: “अय अल्लाह तु मेरा रब है, तेरे अलावा कोय सय्या माबुद नहीं, तूने भुजे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूं.” (सहीह बुजारी: ५८४८)

और इरमाने एलाही हैं: “अगर अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई गालिब (हावी) नहीं हो सकता और अगर वह तुम्हारी मदद से हाथ उठा ले तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करेगा? लिहाज एमान वालों को अल्लाह ही पर बरोसा करना चाहीये.”

(सुरह आले-एमरान: १५०)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने नसीहत करते हुअे इरमाया: “जब तुम मांगो तो अल्लाह ही से मांगो और जब तुम मदद तलब करो तो अल्लाह ही से मदद तलब करो.” (तिर्मिज़ २४४०, सहीह)

उपर की आयात व अहादीष से वाजेह (स्पष्ट) है, कि हर किस्म की एबादत अल्लाह तआला ही के लिये जास है, एसलिये किसी भी किस्म की एबादत में अल्लाह तआला के नबियों, इरिशतों या नेक लोगों को शामिल करना जाइज नहीं, युनाये जो लोग अल्लाह तआला की उलूहियत (एबादत) और रब्बूबियत में गैरुल्लाह (यानी दुसरो) को शरीक ठहराते हैं, उन लोगों का रद्द करते हुअे अल्लाह तआला ने इरमाया: “उन्होंने अपने उलमा और दुरवेशों (पीरों, इक़ीरों) को अल्लाह के सिवा अपना रब बना लिया है.” (सुरह तोबा: ३१)

अदी बिन हातीम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एस मुबारक आयात की तइसीर (व्याख्या) जुद आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने मेरे सामने बयान इरमाय: जब मैं इस्लाम लाने के लिये आपकी जिदमत में हाजिर हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने यही आयात तीलापत इरमाय. एस पर मैंने अर्ज किया कि वह लोग (यहुद व नसारा) अपने उलमा की एबादत तो नहीं करते, फिर यह क्यों कहा गया कि उन्होंने अपने उलमा को रब बना लिया है? तो आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: “क्यों नहीं! जब उनके उलमा और जुजुर्ग उनके लिये हराम को हलाल, और हलाल को हराम करार देते तो वह उनकी पैरवी किया करते थे. यही तो उनकी एबादत करना है.”

(तिर्मिज़: ३०८५, सहीह)

गोया कि आप सल्लल्लाहु अलयहि पसल्लम ने अल्लाह तआला कि ओर जुद अपनी तालीमात (शिक्षाओं) के जिलाइ किसी की बात पर अमल करने को उसकी एबादत करार दिया है. यहां यह बात भास तौर पर तवज्जो तलब है कि यही वह तोहीटे उलूहियत है जिसमें मुशिरकीने मकडा समेत हर टोर के मुशिरक दूसरों को अल्लाह का शरीक ठहराते रहे हैं.

एबादत करने का सही तरीका :

एबादत के लिये तीन चीजें बहुत जरूरी हैं: मुहब्बत, जोइ (डर) और उम्मीद. एबादत में, मुहब्बत का इरमांवरदारी के साथ, और जोइ का उम्मीद के साथ जमा होना जरूरी है, जैसा कि अल्लाह तआला ने मोमिनों की जूबियों का ठीक करते हुअे इरमाया: “ और एमान वाले अल्लाह से बेहद मुहब्बत करते हैं.” (सुरह बकर: १५५)

और अपने अंभिबया अलेहिमुस्सलाम की जूबियों का ठीक करते हुअे अल्लाह तआला इरमाता है: “बेशक वह लोग नेक कामों की तरफ़ जल्दी करते थे और हमें उम्मीद व जोइ से पुकारते थे, और हमारे सामने आञ्जली (पिनन्नता) एफितयार करते थे.” (सुरह अंभिबया: ८०)

अस्लाइ का डौल है: “जो शप्स यह कहता है कि मैं अल्लाह की एबादत जन्नत के हासील करने या जहन्नम से बचने के लिये नहीं बल्कि सिई उसकी मुहब्बत में करता हूं तो ऐसा शप्स ज़न्दीक (यानी बेदीन) है, और जो शप्स मुहब्बत और अज़ाब के जोइ के बगैर सिई ज़ेरे की उम्मीद के लिये अल्लाह की एबादत करता है तो ऐसा शप्स मुरजया में से है (मुरजया गुमराह इरका है), जो शप्स अल्लाह की मुहब्बत और उससे ज़ेरे की उम्मीद के बगैर सिई उसके अज़ाब के डर से एबादत करता है तो ऐसा शप्स हज़री यानी जारज है (जारज गुमराह इरका है). और जो शप्स अल्लाह की एबादत मुहब्बत, जोइ और ज़ेरे की उम्मीद के साथ करता है वह ही मोमिन मुपह्हिद है.”

(“अल-उबूदिया” शेजुल इस्लाम एब्ने तेमिया रह.)

दुआ करना भी एबादत है

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि पसल्लम ने इरमाया: “दुआ

एवमादत ही है.” (अबू दावूद: १४७, सहीह)

(३) तौहीदे अरमा व सिफ़ात (नाम व ખૂबियां)

यानी अल्लाह तआला के उन तमाम बेहतरीन नामों और बुलंद सिफ़ात (ખૂबियों) पर एमान लाना जिनका ठीक कुरआन व हदीष में हैं और उनके हकीकी मअना तस्लीम करते हुये उनमें किसी भी किस्म की तापील (यानी उसके जाहिरी मअने न लेना), तहरीफ़, तशबीह और केइयत भयान करने से भयना चाहिये.

अल्लाह तआला इरमाता है: “उस जैसी कोय चीज़ नहीं, वह ખૂब सुनने और देखने वाला है.” (सुरह शूरा: ११)

और इरमाया: “अल्लाह तआला के लीये मिसालें (उदाहरण) मत बनाओ, अल्लाह खूब जानता है और तुम नहीं जानते.”

(सुरह नहल: ७४)

यानी अल्लाह की ज़ात या सिफ़ात (ખૂबियों) को मખ्लूक की सिफ़ात पर कयास करना (अनुमान लगाना) जाइज़ नहीं. जैसे यह मिसाल देना कि बादशाह से मिलना हो या उससे कोय काम हो तो कोय सीधे (Direct) बादशाह से नहीं मिल सकता, पहले बादशाह के करीबी लोगों से मिलना पडता है तब जाकर बादशाह के पास पहुंच सकते हैं, एसी तरह अल्लाह पाक की ज़ात बहुत उंची है उस तक पहुंचने और अपनी बात पहुंचाने के लिये हमें किसी वास्ते की जरूरत पडती है.

अल्लाह तआला ने एस तरह की मिसालें देने से मना कर दिया है, क्योंकि अल्लाह को उसकी बनाए हुए कमजोर मख्लूक पर कयास नहीं किया जा सकता. एसी तरह अल्लाह पाक के लिये छत और सीढी की मिसाल देना भी अल्लाह की शान में गुस्ताभी है.

अल्लाह तआला कहा है?

कुछ लोगों का यह अकीदा कि अल्लाह तआला हर जगह मौजूद है, गलत है. सही अकीदा यह है कि अल्लाह तआला अपनी ज़ात (अस्तित्प) के साथ सातवें आसमान के उपर अर्श पर है, और उसका एल्म, कुदरत

(ताकत) और ताईद (समर्थन, मदद) हर जगह मौजूद है।

अल्लाह तआला खुद इरमाता है: “रहमान अर्श पर मुस्तवी है।”

(सुरह ताहा: ५)

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने अेक लोन्डी (बांटी) से पूछा: “अल्लाह कहा है? उसने जवाब दिया “अल्लाह आसमान पर है, ईर आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने पूछा: “ में कौन हु?” उसने जवाब दिया आप अल्लाह के रसुल हैं. आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया “ईसे आऊाद कर दो क्यौंकि यह मोमिना है.”

(सहीह मुस्लिम: ८३५)

मेराज का वाकेआ और अल्लाह तआला का हर रात दुनियावी आसमान पर उतरना ईसके वाजेह (स्पष्ट) दलाईल हैं.”

(बुजारी: ११४५)

वजहत: ईमाम मालिक रह० का मशहूर कौल है: “अल्लाह तआला का अर्श पर मुस्तवी होना मालूम है, लेकिन उसकी कैफियत किसी को नहीं मालूम, ईस्तवा पर ईमान लाना वाजिब (जइरी) है लेकिन ईस्तवा की कैफियत के बारे में सवाल करना बिदअत है.”

(बुनियादी अकाईद, पेज:१३४)

कलिमा-अे-तौहीद “ला ईला ह ईल्लल्लाह” का मअना और मइहुम “ला ईला ह ईल्लल्लाह” का मअना है: “अल्लाह के सिवा कोई सअ्या मअबुद नहीं.”

ईसका मइहुम (मतलब) यह है कि...

अल्लाह के अलावा हर चीज की ईबादत से ईन्कार और सिई अल्लाह ही के लिये ईबादत का हक साबित करना. उसका न ईबादत में कोई शरीक है, न बादशाहत में और न उसके सिवा कोई मुश्किल कुशा (तमाम मुश्किले दूर करने वाला), न गौसे आऊम (सबसे बडा इरियाद सुनने वाला), न गरीब नवाऊ (गरीबों को नवाऊने वाला), न गन्ज बज्श (जजाने बज्शाने वाला), न दाता (सब कुछ देने वाला) और न दस्तगीर (मुसीबत के वकत हाथ थामने वाला). यह सारी जूबियां सिई

और सिर्फ़ अक़ अल्लाह ही में हैं, धनमें से किसी अक़ ज़ुबी को भी अल्लाह के साथ दूसरों में भी समझना अल्लाह के साथ शरीक (हिस्सेदार) करना है जो कि शिर्क़ हैं।

अल्लाह रब्बुल आलमीन इरमाता है: “उस (अल्लाह) को छोड़कर जिनकी तुम ईबादत करते हो वो ईसके सिवा कुछ नहीं हैं कि अस र्यंद नाम हैं, जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने जुद ही घड लिये हैं, अल्लाह ने उसकी तो कोई दलील नाज़िल नहीं की.” (सुरह यूसुफ़: ४०)

और इरमाया: “और उससे बढकर जयादा गुमराह और कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसे लोगों को पुकारता है जो कियामत तक उसकी दुआ कुबूल न कर सकें, बल्कि उनकी आवाज से भी बेफ़बर (अन्जान) हों. और जब सब लोग जमा किये जायेंगे तो (जिनको ये पुकारते थे) वह उनके दुश्मन हो जायेंगे और उनकी ईबादत से साफ़ ईन्कार कर देंगे.” (सुरह अहकाफ़: ५-९)

ओलाद देना किसके ईप्तिहार में है?

ओलाद देना और न देना सिर्फ़ अल्लाह के ईप्तिहार में हैं, अगर अल्लाह ओलाद देना चाहे तो कायनात की कोई शिफ़ायत उसे ओलाद देने से नहीं रोक सकती और अगर अल्लाह ओलाद न देना चाहे तो कायनात की कोई भी शिफ़ायत ओलाद नहीं दे सकती, ईसलिये ओलाद सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही से मांगनी चाहिये.

अल्लाह रब्बुल आलमीन इरमाता है: “आसमानों और जमीन की बादशाहत अल्लाह ही के लिये है, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियां देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है. या जिसे चाहता है बेटे और बेटियां दोनों देता है और जिसे चाहता है बांउ (बे-ओलाद) कर देता है, वह सब कुछ जानता है और हर चीज़ पर मुक़म्मल कुदरत रफ़ता है.” (सुरह शुरा: ४८-५०)

नोट:- कुरआन मज्द की ईस आयात को पढने के बाद उन लोगों को भी सोचना चाहिये जो बेटा न होने की वजह से औरत का ज़ना हराम कर

दते हैं और जरा भी नहीं सोचते कि हम उनसे उस चीज़ का मुतालबा कर रहे हैं जो उनके धर्मियार में ही नहीं है।

“ला धला ह धल्लाह” की शर्ते

“ला धला ह धल्लाह” की गवाही में नीचे लिखी सात(७) शर्ते का पाया जाना जरूरी है, धस कलिमा के पढने वाले को धसका इयदा उसी पकत हो सकता है, जब यह सारी शर्ते उसमें पाध जाये।

(१) **धल्म (इ्ञान):** कलिमा-अ-तोहीद के मअना और मइहुम (मतलब) को जानना, यानी अेसा धल्म हासिल करना जिससे जिहालत का रद्द हो. जैसा कि इरामाने धलाही है: “सिपाय उन लोगों के जो हक बात का धकरार करें और उन्हें धल्म भी हो.” (सुरह जुधइइ:८५)

हक बात से मुराद कलिमा-अ-तोहीद “ला धला ह धल्लाह” है, धसका धकरार धल्म और बसीरत (सूळ बूळ) की बुनियाद पर हो, सिई देजा देजी या रस्मी न हो.

धरशादे रब्बानी है: “अरछी तरह जान लो! कि अल्लाह के अलापा कोध धबादत के लायक नहीं.” (सुरह मुहम्मद: १८)

धससे जाहीर होता है कि सिई ळबान से कलिमा-अ-तोहीद अदा कर लेना ही काई नहीं, बल्कि कलिमा के मअना और मतलब को जानना भी इर्ध और जरूरी है.

(२) **यकीन:** कलिमा-अ-तोहीद पर मुकम्मल यकीन हो यानी “ला धला ह धल्लाह” का पढने वाला यह अकीदा रजे कि अल्लाह तआला के अन्दर जितनी सिइात (भूभियां) हैं, वह सिई उसी के अन्दर पाध जाती हैं, किसी दूसरे के अन्दर उनका पाया जाना असंभव और नामुभिकन है. यह अकीदा धतना मळबूत हो कि धसमे ळर्रह बराबर भी शक की गुन्धधश न हो.

धरशादे बारी है:- “भोभिन वह लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर (मजबूत) धमान लाते हैं, फिर शक व शुब्हा नहीं करते और अपने मालों और जानो के जरीये अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं,

(अपने धर्मान के दावे में) यही लोग सच्ये हैं.” (सुरह हुजरात:१५)

(३) **धर्मास:** धर्मास यह है कि अपने अमल (कर्म) को हर किस्म के शिर्क की मिलावट से पाक रखा जाये. यानी “ला धला ह धल्ललाह” का पढने वाला, जिस तरह अल्लाह की उलूहियत का धरार करता है, उसी तरह गैरुल्लाह से अपनी दूरी का भी धरार करे. धरालिये ला धला ह धल्ललाह को कलिमा-अे-धर्मास भी कहा जाता है और “कुल हुपल्लाहु अहद” को भी सुरह धर्मास धरालिये कहते हैं कि धरामें जालिस अल्लाह तआला की तोहीद का ऋक है और धरामें अल्लाह तआला के लिये हर किस्म के रिशते नाते, साजेदारी और बराबरी का धरार किया गया है, धरालिये यह अकीदा रचना कि अल्लाह पाक सबकुछ करने वाला है लेकिन “इलां भी कुछ कम नहीं” यह धर्मास के जिलाइ (पिरुइ) है.

(४) **सर्याध:** कलिमा-अे-तोहीद की गवाही सच्ये दिल् के साथ हो, सिई ऋबानी धरार काम नहीं आयेगा. जैसे कि अल्लाह तआला ने मुनाइकों के बारे में इरमाया है कि वह जवान से तो कलिमा पढते थे, लेकिन उनके दिल् उसकी सर्याध को नहीं मानते थे, ऐसे लोगों के बारे में अल्लाह तआला इरमाता है: “कुछ लोग केहते तो हैं कि हम अल्लाह और आभिरत (कियामत) के दिन पर धर्मान रपते हैं, लेकिन हकीकत में वह धर्मान वाले नहीं हैं.” (सुरह बकर: ८)

और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: “जे शाप्स सच्ये दिल् से गवाही दे कि, “अल्लाह तआला के सिवा कोय सर्या मअबुद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अल्लाह के रसुल हैं” तो अल्लाह तआला उस पर जहन्नम को हराम कर देगा.”

(सहीह बुजारी: १२५)

(५) **मुहब्बत:** अरथी और मनपसंद चीज की तरइ दिल् के मैलान और ऋकाव को मुहब्बत केहते हैं. यहां मुहब्बत से मुराद यह है कि कलिमा पढने वाले को कलिमा-अे-तोहीद और उसके तकाओ से मुहब्बत, लगाव और दिल्चरपी हो, और उस के दिल् में अल्लाह और उसके रसुल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की मुहब्बत हर चीज से यहां तक की अपनी

जान से ली जयादा हो. धंसी तरह उन मुपह्हिदो से ली मुहब्बत हो जे “ला धला ह धल्लल्लाह” को मानने वाले और उसके तकाजों को पूरा करने वाले हों और उन लोगों से नफ़रत हो जे धंस कलिमा के तकाजों को पूरा नहीं करते, धंसलिये कि जिसे अल्लाह और उसके रसुल सल्लल्लाहु अलयहि पसल्लम से मुहब्बत होगी वह यकीनन अल्लाह के दीन से मुहब्बत करेगा और उस पर अमल करने की कोशिश करेगा, धंसी तरह वह शप्स शिर्क और मुशरिकाना अकाधद व आमाल से ली नफ़रत करेगा.

धरशादे बारी है: “कुछ लोग जैसे ली हैं जे दुसरों को अल्लाह का शरीक (साजेदार) बनाकर उनसे ली जैसे ही मुहब्बत रभते हैं, जैसे मुहब्बत अल्लाह से होनी चाहिये और धमान वाले अल्लाह की मुहब्बत में बहुत सप्त होते हैं.” (सुरह बकर: १५५)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि पसल्लम ने इरमाया: “तीन बातें ऐसी हैं कि जिस शप्स में यह मौजूद होगी वह धमान की (हकीकी) हलापत और मिठास को पा लेगा, (१) अल्लाह और रसुल सल्लल्लाहु अलयहि पसल्लम से सबसे जयादा मुहब्बत रभता हो, (२) किसी शप्स से सिर्इ अल्लाह की रज़ा (भुशी) के लीये मुहब्बत रभे और (३) कुछ जिससे अल्लाह तआला ने उसे बया लिया है, उसकी तरफ़ पलटना पैसा ही नापसंद करे जैसा कि उसे आग में डाल दिया जाना नापसंद हो.”

(सहीह बुजारी: १५)

(५) **धताअत और इरमांवरदारी:** कलिमा-अ-तोहीद का पढने वाला धसका जहीरी और बातीनी (अंधुइनी) तोर पर ताबे (आज़ाकारी) हो जाये, और यह उसी पकत होगा जब धन्सान दीन के अहकामात पर अमल करे और शरिअत की हराम की हुध चीज़ों को छोड दे.

इरमाने धलाही है: “और तुम अपने रब की तरफ़ रूजू करो और उसके आज़ाकारी बन जाओ.” (सुरह जुमर: ५४)

(७) **कुबूल:** कलिमा-अ-तोहीद और उसके तकाजों को मुकम्मल तोर से कुबूल करना, धनमें से किसी चीज़ का धन्कार न करना, और उसके भकसद व मुराद पर अमल करने को जबरदस्ती या जयादती न समजना,

બલ્ક દિલ કી ખુશી કે સાથ કુબૂલ કરના.

ઇરશાદે રબ્બાની હૈ: “જબ ઉનસે કહા જાતા થા કિ અલ્લાહ કે સિવા કોઈ સરખા મઅબુદ નહી, તો (ઇસકો કુબૂલ કરને સે) ઈન્કાર કરતે હુએ કેહતે થે કી કયા એક દિવાને શાઈર કી બાત પર હમ અપને માઅબુદોં કો છોડ દે?” (સુરહ સાફ્ફાત: ૩૫-૩૬)

અલ્લામા મુહમ્મદ અમીન શનકીતી રહ. ઇસ આયાત કી તફ્સીર (વ્યાખ્યા) કરતે હુએ ફરમાતે હૈ: “યાની ઇસ કલિમા કો કુબૂલ કરને મેં તકબ્બુર કિયા કરતે હૈં ઓર ઇસ બાત પર રાઝી નહીં હૈં કિ રસુલોં કી ઈતિબાઅ (પેરવી) કરે.” (અજવાઉલ બયાન: ૬/૬૮૫)

એક ઓર જગહ અલ્લાહ રબ્બુલ આલમીન ફરમાતા હૈ: “ઓર જબ ઉનસે કહા જાતા હૈ કિ અલ્લાહ કી ઉતારી હુઈ વહીય કે મુતાબીક ચલો (યાની ઈતિબાઅ કરો), તો કેહતે હૈં કિ હમને તો જિસ તરીકે પર અપને બાપ-દાદા કો પાયા હૈ, ઉસી તરીકે પર ચલેંગે, (કયા) અગરચે શૈતાન ઇનકે બડોં કો જહન્નમ કે અઝાબ કી તરફ બુલાતા હો (તબ ભી ઉન્હીં કે તરીકે પર ચલેંગે)?” (સુરહ લુકમાન: ૨૧)

નોટ : આજ કલ ગાનો ઓર કવ્વાલી યહા તક કિ અબ તો નઅત કે નામ પર ભી હમારી ઝબાનોં સે શિકિયા અલફાઝ બુલવાએ જા રહેં હૈ, મિસાલ કે તોર પર ઉન શિકિયા વ કુફિયા અલફાઝોં મેં સે કુછ અલફાઝ યહ હૈં:

૧. વહી જો મુસ્તવી અર્શ થા ખુદા હોકર
ઉતર પડા હૈ મદીના મેં મુસ્તફા હોકર.
૨. તાજદારે હરમ હો નિગાહે કરમ
હમ ગરીબોં કે દિલ ભી સંવર જાએંગે....
૩. ખુદા ભી જબ આસમાં સે દેખતા હોગા,
મેરે મહબૂબ કો કિસને બનાયા સોચતા હોગા.
૪. તુજમેં રબ દિખતા હૈ ચારા મેં કયા કહૂ....

ઇસ તરહ કે ઓર ભી બહુત સે શિક્કિયા વ કુક્કિયા અશઆર વ ગાને વગેરાહ હૈ, જિનકો કલમા પઢને વાલે અપની ઝબાન સે ખૂબ અદા કર રહે હૈ, જબકિ ઇસસે હમે હર હાલ મે બચના ચાહિયે, ઇસી તરહ ગેરુલ્લાહ કી કસમે ભી ખૂબ ખાઇ જા રહી હૈ જેસે: માં બાપ કી કસમ, રોઝી રોટી, બચ્યે, જાન, સર, કઅબા, કુર્આન, મસ્જિદ યા નબી વગેરાહ કી કસમ, જબકી ઇસ તરહ કી કસમ ખાના શિક્ક હૈ. ઇસલિયે ખુદ કો, બચ્યો કો ઓર દૂસરો કો ભી ઇસ તરહ કી તમામ ખુરાફાત સે બચાએ. અલ્લાહ તઆલા હમે ઓર આપકો આખિરત મે કભી માફ ન હોને વાલે ગુનાહ યાની શિક્ક સે મહફૂજ (સુરક્ષિત) રખે. આમીન યા રબ્બલ આ-લમીન.

આખિર મે અપને કલમા પઢને વાલે ભાઇચો ઓર બહનો સે ગુજારિશ હૈ, કિ અકીદા-એ-તોહીદ કા ઇલ્મ (જ્ઞાન) હાસિલ કરે, કયોકિ યહ બુનયાદી ઓર પહલી ચીઝ હૈ, હમારા અકીદા-એ-તોહીદ ઠીક હોગા તબ હી જન્નત મે દાખિલા ચકીની હોગા.

તોહીદ કે મોજૂ પર જયાદા જાનને કે લિયે આપ “ઇસ્લામિક ઇન્ફોર્મેશન સેન્ટર” સે કિતાબે હાસિલ કર સકતે હૈ. આઇદા ભી ઇસી તરહ કે દીની વ ઇસ્લાહી પેમ્ફ્લેટ છાપને કા ઇરાદા હૈ, અગર આપ ભી ઇસ તરહ કે પેમ્ફ્લેટ દૂસરો તક પહુંચાના ચાહતે હૈ યા ઇસ તરહ કે પેમ્ફ્લેટ કી નશરો ઇશાઅત મે હિસ્સા લેના ચાહતે હૈ તો હમસે રાબ્તા કરે.

ઇસ પેમ્ફ્લેટ કી તરતીબ મે શેખ અબ્દુલ ખાલિક મુહમ્મદ સાદિક હિ., શેખ કે. અમીનુર્રહમાન હિ. વ દીગર ઉલમા-એ-કિરામ કી તહરીરો સે ઇસ્તેફાદા કિયા ગયા હૈ.



અપીલ :- અલ્હમ્દુલીલ્લાહ, ઇસ્લામીક ઇન્ફોર્મેશન સેન્ટર-ભુજની સ્થાપના ૨૦૧૨ ના વર્ષમાં થઇ હતી. તેનો હેતુ અલ્લાહના દીનથી અજાણા લોકો સુધી ઇસ્લામનો સંદેશ પહોંચાડવાનો છે. સંસ્થા દીનની દાવત માટે જે કંઇ કરી રહી છે તેની માહિતી આપ સૌ સુધી પુસ્તકોના માધ્યમથી પહોંચતી રહી છે. આપ જાણો છો કે દીની સાહિત્ય છપાવવા માટે વિશેષ આયોજન અને નાણાકીય ભંડોળની જરૂર રહે છે. આ સંદર્ભમાં આપને તન-મન અને ધનથી સંસ્થાને સહકાર આપવાની નમ્ર અપીલ કરીએ છીએ.

